रात्रि क्लास 17-6-68 ओमशान्ति "अपन को आत्मा समझ भाई3 देखो"

बाप भी सफेद पोश बच्चे भी सफेद पोश। सफेद पोश सभी शोभते हैं। बाप बच्चों को पहले2 कहते हैं बच्चे आत्मअभिमानी हो बैठे। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। इसमें मुंझ होती है तो बाप से पूछते हैं कि इस में भी मुंझ होती है। या कोई को संशय है तो पूछ सकते हैं। एक बात ही याद करनी है। बाप कहते हैं और सभी बातें भूल जाओ सिर्फ बेहद के बाप को याद करो। देह के सम्बन्ध छोड़ते जाओ। तो पवित्र बन पवित्र घर चले जावेंगे। पवित्र बनने लिए ही बाप को बुलाया है। बाप खुद कहते हैं मैं इस रथ में विराजमान होता हूं। बहुत जन्मों के अन्त में यह है रथ। यह पहले2 सूर्यवंशी सतोप्रधान था। राजा था तो प्रजा भी होगी। तत त्वम। तुम भी 84 का चक्र लगाकर फिर नम्बरवन में देवता बनते हो। हर बात का पुरुषार्थ करना होता है। पुरुषार्थ करना होता है पतित से पावन बनने का। रास्ता भी वही बताते हैं। बच्चों को युक्ति बतलाते हैं। इस बात को अगर न समझा तो गोया कुछ नहीं समझा। भक्त के भक्त ही रह जावेंगे। पहले2 है अलफ की बात। अंगुली से ईशारा करते हैं ना। अभी वह तो है निराकार। और तुम भी आत्माएं निराकार थे। फिर चोला ले साकार बने हो। बाप भी निराकार है। साकार को पढ़ाने लिए इसमें प्रवेश करते हैं। बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त के जन्म में पतित शरीर पतित दुनिया में आते हैं। पुराना ते पुराना पतित ते पतित शरीर है। उनको फिर नम्बरवन में जाना है। बाप राय भी अच्छी देते हैं। देह के सभी धर्म छोड़ मामेकं याद करो तो पाप कट जावेंगे सभी को गाईड बन ले जाऊंगा। चक्र आद भी समझाना है। सतयुगमें थोड़े मनुष्य कलियुग में ढेर मनुष्य। तो शान्तिधामसुखधाम में तो बाप के सिवाय कोई ले जा न सके। कितनी सहज बात है। बाप सभी को कहते हैं बच्चे अपन को आत्मा समझ बैठो। बाप लिबरेटर गाईड बन शान्तिधाम ले जाते हैं। वह है आत्माओं का घर। जहां से आते हैं पार्ट बजाने। फिर वापस कैसे जावें। उनको याद करते रहते हैं। वह आकर सहज युक्ति बताते हैं। मामेकं याद करो। मुंझने की तो बात ही नहीं। ऐसे निश्चय बुधि बनाकर ब्राहमणियों को ले आना चाहिए। तो उनको आने से खुशी रहेगी। सृष्टि चक्र के आदि मध्य-अन्त का ज्ञानबाप समझाते हैं। 84 का चक्र जरूर खाना है। उनको ही ड्रामा कहा जाता है। यह समझना बहुत सहज है। एक ही बात मुख्य है। जो पैगाम सभी को देना है। तुम कुमारियां क्या सीखती हो। ट्रेनिंग वेस्ट करते हो। यह अभी रिवाज़ निकला है जो कुमारियां भी कमा कर खिलाती है। कन्या के पैसे पर सारा घर चलता है। आगे यह रिवाज नहीं था। यह भी ड्रामा में है। यह अनलाफुल राज्य, अनलाफुल कायदे हैं ना। यह भी ड्रामा का राज़ बाप समझाते हैं। कैसे यह सृष्टि का चक्र है। सभी आत्माओं को पार्ट मिला हुआ है। जो नम्बरवार उनको बजाना है। एक्युरेट चलते रहते हैं। भक्ति मार्ग में सभी हैं मनुष्यवाच। यहां है शिव भगवानुवाच। बाप समझाते हैं यह याद रखनी चाहिए। हम देवी देवता बनने लिए पढ़ते हैं। भल कहते तो हैं हम ल0ना0 बनेंगे परन्तु सर्विस का सबूत भी चाहिए ना। नहीं तो फिर ना0 कैसे बनेंगे। राजाओं का राजा भी बनते रहते हैं। 21 पीढ़ी तुम राज्य करेंगे। यह है बहुत ऊंच पढ़ाई। इस में तो एक दिन भी मिस करने की दरकार नहीं। बहुत हैं बच्चे तो मिस करते रहते हैं। पढ़ाई मिस कब न करनी चाहिए। रिवाईज करना चाहिए। घड़ी2 मुरली को पढ़ना चाहिए। कहते हैं ना राम सिमर प्रभात रे मीरे मन। अभी बाप मिला तो उनको याद करने से विश्व का मालिक बनेंगे। याद भी करना है। चक्र भी समझना है और समझाना है। इतने सभी को पैगाम कौन देंगे। बच्चों को देना है। वास्तव में असल में तुम पक्के देवता थे फिर पक्के हिन्दु भी तुम बने हो। हो तुम देवता ही परन्तु पतित दुनिया में पतित शरीर में कैसे कहेंगे। अभी तुमको पता पड़ा है। हम ही देवताएं थे फिर ऐसे2 जन्म लिये हैं। जो जितना देर से पुरुषार्थ करते है वह देरी से ही आवेंगे। यह समझ की बात है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते। नमस्ते।

*::***::*